The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 8 | August 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में डिजिटल इंडिया में कैशलेस ट्रांजेक्शन (एप्स) के प्रति जागरूकता का अध्ययन

डॉ. मनीष सैनी,

असिस्टेंट प्रोफेसर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,जयपुर

मनीषा सोनी,

एम.एड. छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज,जयपुर

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:

सॉफ्टवेयर , डजिटल, आरबीआई, भुगतान, इलेक्ट्रॉनिक

ABSTRACT

भारत में विमुद्रीकरण (नोटबंदी) से पहले कैशलेस पेमेंट का कोई बड़ा मुद्दा नहीं था। आम लोगों के बीच न तो इसका प्रचलन था और न ही इसके प्रति जिज्ञासा और उत्साह। हाँ, नौकरीपेशा कुछ लोग, कम्पनी के बड़े अधिकारी और कुछ व्यवसायी वर्ग क्रेडिट कार्ड या फिर डेबिड कार्ड का उपयोग कैशलेस लेनदेन के लिए जरूर कर रहे थे। परन्तु जब से देश में नोटबंदी लागू हुआ है और कैश यानि नगदी की समस्या बड़ी है, तब से कैशलेस लेनदेन का दायरा बढ़ गया है। सरकार कैशलेस लेनदेन करने वालों के लिए कई तरह की छूटें और पुरस्कार की घोषणा कर चुकी है। बैंक और कई कम्पनियाँ कैशलेस लेनदेन को बढ़ावा देने और इसे सुगम बनाने के लिए नए–नए सॉफ्टवेयर और मोबाइल एप्स की सुविधा प्रदान कर रहे है। आरबीआई/सरकार प्रीपेड उपकरणों और कार्ड सहित डिजिटल/भुगतान उपकरणों को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था में नकदी के उपयोग को कम करने के लिए कई प्रयास कर रही है। भुगतान और निपटान सुविधाओं की इन नई किस्मों को प्रोत्साहित करने के आरबीआई के प्रयास का उद्देश्य 'कम नकदी' समाज के लक्ष्य को प्राप्त करना है। हाथ में सीमित नकदी और दृष्टि में अनिश्चितकालीन संकट के साथ, अधिकांश लोग कैशलेस लेनदेन के लिए भाग रहे हैं।

प्रस्तावना :–

कैशलेस ट्रांजेक्शन अर्थव्यवस्था आरबीआई और सरकार प्रीपेड इंस्ट्रूमेन्ट्स और कार्ड सहित डिजिटल/भुगतान उपकरणों को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था में नकदी के उपयोग को कम करने के लिए कई प्रयास कर रहे हैं। भुगतान और निपटान सुविधाओं की इन किस्मों को प्रोत्साहित करने के लिए आरबीआई के प्रयास का उद्देश्य 'कम नकदी' समाज के लक्ष्य को प्राप्त करना है। यहाँ, कम नकदी समाज और कैशलेस ट्रांजेक्शन इकोनॉमी शब्द कैश ट्रांजेक्शन और सेटलमेंट को डिजिटलरूप से करने के बजाय कम करने का संकेत देते है।

कैशलेस ट्रांजेक्शन इकोनॉमी का मतलब नकदी की कमी नहीं है, बल्कि यह डिजिटल रूप से लेनदेन करने वाले लोगों की संस्कृति को इंगित करता है। आधुनिक अर्थव्यवस्था में, पैसा इलेक्ट्रॉनिक रूप से चलता है इसलिए लक्ष्य प्राप्त करने के लिए बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के साथ–साथ डिजिटल भुगतान संस्कृति का प्रसार आवश्यक है।

कालेधन, भ्रष्टाचार, जाली मुद्रा और आतंक के वित्त पोषण से निपटने के लिए, सरकार ने 8 नवम्बर, 2016 को 500 और 1000 रूपये के नोटों पर प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया।इसके बाद बैंकों और एटीएम से निकासी पर अधिकतम रोक लगाई गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कैशलेस का विचार बनाया जिसका मुख्य उद्देश्य नकली धन और कालेधन से लड़ना था। यह एक सार्वजनिक क्षेत्र का नवाचार है जो इतिहास में बिना सोचे–समझे चल रहा है लेकिन इस आश्चर्यजनक विमुद्रीकरण ने देश के डिजिटल आर्थिक गिड पर लाखों नए उपयोगकर्ताओं को वर्चुअल फिएट द्वारा धकेल दिया। सरकार के लिए नकदी अधिक महंगी हो सकती है क्योंकि कर चोरी, भ्रष्टाचार और पुनर्वितरण को पुराना, खराब मुद्रा रखने और हस्तांतरण को सक्षम करने की आवश्यकता है।

समस्या का औचित्य –

नोटबंदी के बाद सरकार चाहती है कि लोग कैशलेस लेन–देन को अपनाएँ ताकि कालेधन और नाजायज धंधों पर रोक लगे। इसका सीधा मतलब ये हुआ कि लोग पेमेंट और फंड ट्रांसफर के लिए यूपी आई, पेमेंट ई–वॉलेट, प्रीपेड, डेबिट और क्रेडिट कार्ड, यूएसएसडी यानि अनस्ट्रक्चर्ड सप्लीमेंट्री सर्विस डाटा और आधार लिंक्ड पेमेंट व्यवस्था को अपना सके।

नकद रूपये का बाजार में ज्यादा प्रचलन होता है तो कई तरह की दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। पहला यह कि जाली नोटों की संख्या बढ़ने लगती है जो अर्थव्यवस्था के लिए सबसे घातक है। दूसरा यह कि यदि अनुमान से अधिक काला धन जमा होने लगेगा तो हर वस्तु के दाम आसमान में जाने लगेंगे। उक्त दोनों ही कारणों से एक समानान्तर अर्थव्यवस्था निर्मित हो जाती है जिसके चलते अमीर और गरीब के बीच खाई इतनी बढ़ जाती है कि समाज में असंतोष और विद्रोह पनपने लगता है।

नगद के अत्यधिक प्रचलन, जाली नोटों की भरमार और बेहिसाब काले धन से नक्सलवाद, आतंकवाद और माफियाओं की समानान्तर सरकार कायम हो जाती है जिसके चलते राज्य में विद्रोह और आपराधिक गतिविधियाँ इतनी बढ़ जाती है कि जिन्हें संभालना मुश्किल हो जाता है इसलिए इसकी आवश्यकता महसूस हुई।

समस्या कथन –

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में डिजिटल इंडिया में कैशलेस ट्रांजेक्शन (एप्स) के प्रति जागरूकता का अध्ययन।''

अध्ययन के उद्देश्य –

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का डिजिटल इंडिया में कैशलेस ट्रांजेक्शन के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना।

अध्ययन से सम्बन्धित परिकल्पनाएँ –

(1) उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में कैशलेस ट्रांजेक्शन में ई–वॉलेट के प्रति जागरूकता में अन्तर नहीं है।

अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि –

प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति एवं प्रस्तावित उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए इस अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्त्री ने कैशलेस ट्रांजेक्शन जागरूकता का अध्ययन करने के लिए चार निजी विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में सौद्देश्य यादृच्छिक विधि से चयन किया गया।

अध्ययन के उपकरण –

प्रस्तुत शोध कार्य में कैशलेस ट्रांजेक्शन से सम्बन्धित उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने के लिए शोधकर्त्री द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

संबंधित साहित्य के अध्ययन

1- **आर.बी.आई. (2024) –"भारत में भुगतान और निपटान प्रणाली दृष्टि–2018"** आर.बी.आई. ने नए छोटे–छोटे वित्त बैंकों और भुगतान बैंकों को खोलने के लिए लाइसेंस जारी किए हैं। वित्तीय समावेश को बढ़ावा देने और अभिनव बैकिंग समाधान लाने की उम्मीद है। चीजें भी गिर रही हैं। भारत के लिए प्रौद्योगिकी के मामले में जगह राष्ट्रीय भुगतान द्वारा हाल में एक अनावरण किया है। भारत में भुगतान और निपटान प्रणाली प्रोत्साहित करने की योजना निर्धारित करना इलेक्ट्रॉनिक, भुगतान और भारत को मध्यम और लम्बे समय तक नकदी रहित समाज या अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ने में सक्षम बनाता है।

2- **एफई ब्यूरो (2024) ने** पेटीएम और मोबिकविक की वृद्धि, जो डिजिटल भुगतान कम्पनियों का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य थे आरबीआई के मुताबिक : प्रदर्शन में वृद्धि करना। निष्कर्ष पेटीएम और मोबिकविक की वृद्धि, जो डिजिटल भुगतान कम्पनियों के रूप में जानी जाती है।

3- **वैभव शाहजी पाटिल और ज्योति मिश्रा (2024)** ने फायदे और नुकसान खोजने के लिए अध्ययन किया। जिसके उद्देष्य थे भारत को नकद रहित अर्थ व्यवस्था बनाने का भारत, बेल्जियम जैसे कई विकसित देशों के बहुत पीछे है। नकदी रहित लेनदेन को लागू करने में फ्रांस, कनाडा, यूएसए, यूके, सऊदी अरब आदि सरकार करना। निष्कर्ष देश के सभी हिस्सों में दूरसंचार नेटवर्क की पहली उपलब्धता और गुणवत्ता सुनिश्चित करें। वित्तीय संस्थान या बैंकों और सम्बन्धित सेवाप्रदाताओं जैसे मध्यस्थों को लगातार प्रौद्योगिकी में निवेश करना होगा।

4- **दीपिका (2023)** – कैशलेस लेनदेन के अध्ययन में तरीके, अनुप्रयोगों और चुनौतियों का अध्ययन किया। जिसके उद्देश्य थे कैशलेस लेनदेन के अध्ययन में तरीके, अनुप्रयोगों और चुनौतियों का अध्ययन करना। निष्कर्ष भारत सरकार द्वारा लागू राक्षस के रूप में, सरकार अपने लोगों को विभिन्न प्रकार की विज्ञापन विधि द्वारा नकद रहित लेन देन के बारे में जागरूक करने की कोशिश कर रही है, लेकिन अभी भी बड़ी संख्या में लोग परिचय के लिए इन्तजार कर रहे हैं। नकदी रहित लेनदेन का एक अलग अध्ययन है। इसके विभिन्न तरीकों, फायदे और चुनौतियाँ यह पत्र नकदी रहित लेनदेन के मूल को समझने में मदद करेगा।

5- **प्रोफेसर त्रिलोकनाथ शुक्ला (जून 2023)** अपने पेपर ''मोबाइल वॉलेट : प्रेजेंट एंड द फ्यूचर'' (जून 2023) ने मोबाइल वॉलेट, काम करने, प्रकार और इसके फायदों नुकसान के बारे में चर्चा के बारे में अध्ययन करना। निष्कर्ष उनकी जाँच में ग्राहकों और खुदरा विक्रेताओं के प्रभाव शामिल थे। पोर्टेबल वेल्ट्स उन्होंने तर्क दिया कि पोर्टेबल वॉलेट का उपयोग करने के लिए उपयोग किया जाएगा। विज्ञापनदाताओं और उन्नत संगठनों द्वारा ग्राहक/बाजार की स्थिति की स्वतन्त्रता इन बहुँमुखी पर्स विज्ञापनदाताओं को विकासशील उद्घाटन का फायदा उठाना चाहिए।

साहित्य विवेचना :–

'प्लास्टिक मनी' के विषय पर कई अनुभवजन्य अध्ययन आयोजित किए गए हैं भारत और विदेशों में। शोध का मुख्य जोर विभिन्न मुद्दों पर रहा है धोखाधड़ी, सुरक्षा, उपयोग पैटर्न, ई–भुगतान की नई विधि इत्यादि। **आर.बी.आई. (2024),एफई ब्यूरो (2024), वैभव शाहजी पाटिल और ज्योति मिश्रा (2024),दीपिका (2023),प्रोफेसर त्रिलोकनाथ शुक्ला (जून 2023)** प्लास्टिक के पैसे पर किए गए पिछले काम

की आवश्यकता है। इसकी समीक्षा की गई है। भारत में इस विषय पर किए गए काम के सामान्य तरीके से संकेत मिलता है। आशा की जाती है कि अध्ययन की महत्वपूर्ण परीक्षा हमारी समस्या पर ध्यान केन्द्रित करेगी और मदद करेगी। उन क्षेत्रों को इंगित करें जो शोधकर्त्ताओं के हाथों उपेक्षित हो रहे हैं। साहित्य की समीक्षा, यह पाया गया कि शायद ही कोई अध्ययन हुआ जिसने जाँच की थी। प्लास्टिक के पैसे के उपयोग पर उपयोगकर्त्ताओं और व्यापारियों दोनों की धारणा इसके अलावा, कई अध्ययन उदाहरण के लिए व्यक्तिगत कार्ड पर केन्द्रित, क्रेडिट या डेबिट कार्ड और उपेक्षित संयुक्त प्रभाव और स्मार्ट कार्ड, चार्ज कार्ड और चेक कार्ड जैसे नए अभिनव कार्ड में इस अध्ययन में, विश्लेषण में सभी प्रकार के कार्ड शामिल करने का प्रयास किया गया है।

परिकल्पना – उच्च माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों में कैशलेस ट्रांजेक्शन में ई–वॉलेट के प्रति जागरूकता में अन्तर नहीं पाया जाता है।

क्र.स	श्रेणी	विद्यार्थियों की संख्या	प्रतिशत
1.	'kgjh	50	63.2 %
2.	ग्रामीण	50	57.2 %

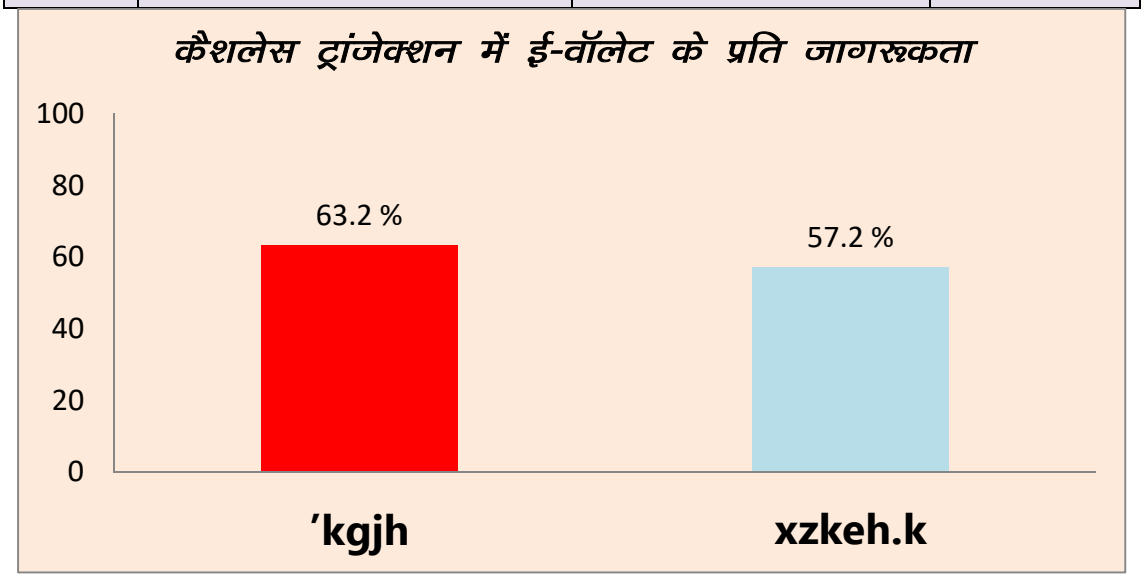

परिणाम :– उपरोक्त तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के षहरी विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांसेक्षन में ई. वॉलेट सम्बन्धी जागरूकता का प्रतिषत 63.2 प्रतिषत है तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांसेक्षन में ई. वॉलेट सम्बन्धी जागरूकता का प्रतिषत 57.2 प्रतिषत है। अतः भारत सरकारी द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के तहत षहरी विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांजेक्षन में ई–वॉलेट के प्रति जागरूकता अधिक पाई जाती है इसका संभवतः कारण यह हो सकता है कि षहरी विद्यार्थी समाचार पत्र, मिडिया, टी.वी, रेडियों, मोबाइल, इंटरनेट का प्रयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक करते है।

निष्कर्ष :–

उच्च माध्यमिक स्तर के षहरी विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांसेक्षन में ई. वॉलेट सम्बन्धी जागरूकता का प्रतिषत 63.2 प्रतिषत है तथा ग्रामीण विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांसेक्षन में ई. वॉलेट सम्बन्धी जागरूकता का प्रतिषत 57.2 प्रतिषत है। अतः भारत सरकारी द्वारा डिजिटल इंडिया प्रोग्राम के तहत षहरी विद्यार्थियों में कैषलेस ट्रांजेक्षन में ई–वॉलेट के प्रति जागरूकता अधिक पाई जाती है इसका

संभवतः कारण यह हो सकता है कि षहरी विद्यार्थी समाचार पत्र, मिडिया, टी.वी, रेडियों, मोबाइल, इंटरनेट का प्रयोग ग्रामीण विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- आर.बी.आई. (2024) : ''भारत में भुगतान और निपटान प्रणाली दृष्टि–2018''
- एफई ब्यूरो (2024) : पेटीएम और मोबिकविक की वृद्धि, जो डिजिटल भुगतान कम्पनियों का अध्ययन।
- दीपिका (2023) : ''कैशलेस लेनदेन के अध्ययन में तरीके, अनुप्रयोगों और चुनौतियों का अध्ययन'', मुम्बई विष्वविद्यालय।
- प्रोफेसर त्रिलोकनाथ शुक्ला (जून 2023) : ''मोबाइल वॉलेट : प्रेजेंट एंड द फ्यूचर'' (जून 2023) ने मोबाइल वॉलेट, काम करने, प्रकार और इसके फायदों नुकसान के बारे में चर्चा के बारे में अध्ययन।
- प्रोफेसर त्रिलोकनाथ शुक्ला (जून 2023) : ''मोबाइल वॉलेट : प्रेजेंट एंड द फ्यूचर'' (जून 2023) ने मोबाइल वॉलेट, काम करने, प्रकार और इसके फायदों नुकसान के बारे में चर्चा के बारे में अध्ययन।

WEBLIOGRAPHY

- www.bekonomike.com
- www.slideshare.net
- www.financialwing.com
- https://ebanking-ch.ubs.com
- https://ebanking.efginternational.com